भूमिका

उन्नीसवीं सदी की शुरुआत से लेकर आज तक साहित्यकारों के द्वारा अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए, नये-नये प्रयोग किए गए हैं। साहित्य में मिथक का प्रयोग प्राचीन समय से होता आया है, मिथक के संबंध में अनेक अवधारणाएँ समाज में व्याप्त हैं, इनकी प्रामाणिकता को लेकर भी प्राय: विद्वानों में मतभेद होने के कारण यह निरंतर चर्चा का विषय रहा है। इसके साथ ही मिथक समाज के प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित और प्रेरित करते आए हैं।

मिथक का प्रारम्भिक स्वरूप मात्र धर्म से जुड़ा हुआ था। तथा इसी धर्म से प्राकृतिक सत्ताओं का अस्तित्व भी जुड़ा है, जो सत्ताएं मनुष्य की आस्था का आधार थी किन्तु जैसे-जैसे समय, समाज में परिवर्तन होता चला गया, मिथकों का स्वरूप भी बदलता गया। आज मिथक विभिन्न ज्ञानानुशासनों (मनोविज्ञान, दर्शन, साहित्य, कला) के साथ जुड़कर अपना अस्तित्व बनाए हुए है। सामान्यत: मिथक सामूहिक अवचेतन मन की अभिव्यक्ति है। जो कभी घटित नहीं हुआ किन्तु हमेशा से सृष्टि में व्याप्त है।

किसी भी रचनाकार या रचना की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह अपने उद्देश्य में कितनी सफल हुई है। यह सफलता जनता पर पड़े उसके प्रभाव से निश्चित होती है। अपनी रचना को प्रभावी बनाने के लिए वह विभिन्न प्रतिमानों और साधनों (प्रतीक, बिम्ब, मिथक) का प्रयोग करता है। मिथक समाज के अभिन्न अंग हैं और प्रत्येक व्यक्ति इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता, इसलिए मिथकों का प्रयोग साहित्य में सफल सिद्ध हुआ है। आदिकाल से अब तक मिथकों की आधारशिला पर अनेकों ग्रंथों की रचना हुई है। कभी इनके वास्तविक रूप ने लोगों को आकर्षित किया तो कभी इनके माध्यम से युगीन बोध की अभिव्यक्ति हुई है।

काशीनाथ सिंह आधुनिक युग के रचनाकार हैं। उनकी प्राय: सभी रचनाओं में यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है। 'रेहन पर रग्घू' से लेकर 'उपसंहार' तक अपनी लेखन शैली से निरंतर समाज को प्रभावित करते रहे हैं। 'उपसंहार' उनकी लेखन शैली का एक अद्भुत परिचायक है। इसमें उन्होंने प्रसिद्ध पौराणिक मिथकीय आख्यान 'महाभारत' की कथा को आधार बनाकर समकालीन मनुष्य का चित्रांकन किया है। यह मानव कृष्ण की कथा प्रतीत होती है। कृष्ण ऐसे मिथकीय पात्र है जो विश्वविख्यात है। उनसे संबन्धित घटनाओं की जानकारी आम जनमानस में गहराई तक व्याप्त है। फिर काशीनाथ सिंह का उनके व्यक्तित्व की नवीन व्याख्या करने के पीछे क्या उद्देश्य है? क्या आज के इस भूमंडलीकरण के दौर में मिथक का रचनात्मक प्रयोग संभव है? कृष्ण कथा को लेकर इस उपन्यास में जो नवीन उद्भावनाएं प्रस्तुत की गई हैं, वह अन्य कृष्ण कथा पर आधारित ग्रन्थों से कैसे भिन्न है? और आज के समय में इनकी क्या प्रासंगिकता है? आदि प्रश्नों ने मुझे इस शोध कार्य के लिए प्रेरित किया।

प्रथम अध्याय मिथक की अवधारणा और स्वरूप है जिसको व्याख्यायित करने के लिए मैंने मिथक के अर्थ की व्याख्या की है, उसके साथ भारतीय, पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई विभिन्न परिभाषाओं का वर्णन किया है। साथ ही मिथक के उद्भव और विकास के संबंध में प्रचलित विभिन्न अवधारणाओं को विवेचित करने का प्रयास किया गया है। आदिकाल से आधुनिक काल तक मिथक अपना स्वरूप किस प्रकार परिवर्तित कर आज भी समाज में अपना अस्तित्व बनाए हुए है। मिथक के संबंध में भारतीय विद्वानों का क्या दृष्टिकोण रहा है, इसको परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। साहित्य मिथक का अन्योन्याश्रित संबंध को समझने और साहित्य में मिथक का प्रारम्भिक रूप एवं आधुनिक रूप में जो परिवर्तन हुआ है, उसको व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'उपसंहार में मिथकीय चेतना' है जिसमें 'महाभारत' जैसे प्रसिद्ध आख्यान का मिथक के रूप में क्या महत्व है, इसको समझने का प्रयास किया गया है, इसके साथ ही 'उपसंहार' में किस प्रकार मिथक का पुनर्सृजन किया गया है, जिसमें कृष्ण की उत्तर कथा को नवीन

संदर्भों के साथ काशीनाथ सिंह ने प्रस्तुत किया है उसको व्याख्यायित करने का प्रयास गया किया है। कृष्ण कथा के मिथकीय स्वरूप में युग परिवर्तन के साथ जो बदलाव आया है, वह किस प्रकार परंपरागत कृष्ण के स्वरूप से भिन्न है, काशीनाथ सिंह ने 'उपसंहार' में उनके चरित्र की जो नवीन व्याख्या की है उसको इस अध्याय में प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है।

तृतीय अध्याय 'उपसंहार': 'आधुनिक भाव बोध और प्रासंगिकता' है। कोई भी रचना अपने समय, समाज से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती 'उपसंहार' की विषय वस्तु मिथकीय अवश्य है किन्तु वह आज के आधुनिक समाज को अभिव्यक्त करती है। इनमें आए प्रसंग कैसे आज के समय की विडंबनाओं और मनुष्य के चरित्र को व्याख्यायित करते हैं इस अध्याय में विश्लेषित करने का प्रयास किया है। इन घटनाओं की आज के युग में क्या प्रासंगिकता है? और आधुनिक समय में भी कृष्ण कथा से संबन्धित मिथक अपना अस्तित्व कैसे बनाए हुए हैं ? साथ ही यह उपन्यास अपने कथ्य और शिल्प दोनों ही रूपों में कैसे आधुनिकता बोध लिए हुए है जिसका विश्लेषण करने का प्रयास इस अध्याय में किया गया है।

अंतत: अध्यायों के क्रमवार सिलसिले के पश्चात उपसंहार की चर्चा की गयी है। जिसमें तीनों अध्यायों की समग्र रूप से समीक्षा करते हुए एक निष्कर्ष पर पहुचने की कोशिस की गई है। परिशिष्ट में लेखक के चित्र के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व कृतित्व का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया गया है। अंत में शोध कार्य के लिए जिस आधार ग्रंथ तथा संदर्भ ग्रन्थों का प्रयोग हुआ है उसकी सूची दी गई है।

इस लघु शोध-प्रबन्ध के मार्गदर्शन हेतु मैं अत्यंत कृतज्ञता पूर्वक अपने शोध निर्देशक आदरणीय **प्रो॰ कृष्ण कुमार सिंह** की आभारी हूँ जिन्होंने अध्ययन-अध्यापन कार्यों में व्यस्त रहने पर भी जिस सहानुभूति और सौहार्द के साथ इस शोध कार्य का निर्देशन किया है, इसके लिए शाब्दिक कृतज्ञता केवल औपचारिकता मात्र होगी। मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

प्रस्तुत शोध को पूर्ण करने में जिन लोगों ने अपना बहुमूल्य सहयोग और आशीर्वाद प्रदान किया है उनमें सर्वप्रथम मैं साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो॰ सूरज पालीवाल के प्रति हृदय से आभारी हूँ। इसके साथ ही मैं डॉ॰ रूपेश कुमार सिंह के प्रति भी विशेष रूप से आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे लघु शोध प्रबंध के संबंध में पुस्तकों इत्यादि से मेरी मदद की। साथ ही साहित्य विभाग के सभी प्राध्यापकों की मैं आभारी हूँ, जिनके सानिध्य में रहकर लगातार मुझे कुछ सीखने का अवसर प्राप्त हुआ और विभाग के सभी कर्मचारियों का भी आभार व्यक्त करती हूँ। मैं उन सभी पुस्तकों के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहूँगी, जो इस कार्य को सफल बनाने में सहयोगी रही।

शोध को पूरा करने में मेरे परिजनों एवं प्रियजनों का सहयोग मुझे विषम परिस्थितियों में भी आश्वस्ति प्रदान करता रहा। मेरे अपने पूज्यनीय माता-पिता, सास-ससुर, दादा-दादी और परिवार के अन्य सदस्यों का स्नेह प्रत्येक मुश्किल को आसान करने में सहायक रहा। उनके स्नेह और साथ के बिना शायद यह लघु शोध-प्रबन्ध पूरा न हो पाता। जिन मित्रों ने अपना अपूर्व समय देकर मेरी सहायता की उनमें विशेष रूप से में नीलम, आशु, मेहराज अली, आशिष का हृदय से आभार व्यक्त करना चाहती हूँ।

शोध सामग्री की उपलब्धता की दृष्टि से रवि गोस्वामी का सहयोग न भूलने लायक है। इसके साथ ही जिन मित्रों और बड़ो का योगदान कहीं न कहीं इस शोध कार्य को पूरा करने में सहायक रहा है, उनमें एस.पी भइया, भावना, अंकिता, मेघा, रीतू, रवींद्र कुमार आदि का आभार व्यक्त करती हूँ।

और अंत में मैं अपने परम सहयोगी पति के प्रति विशेष आभार व्यक्त करना चाहूँगी, जो प्रत्येक क्षण मुझे इस कार्य को करने के लिए प्रोत्साहित करते रहें और मेरे प्रेरणा स्त्रोत बने।

पूजा